[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No...............

Sr. No. of Question Paper : 847 **G**

Unique Paper Code : 2052202301

Name of the Paper : Hindi Katha Sahitya

Name of the Course : **B.A. (Prog.) Hindi**

Semester : III

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 90

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।

2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. निम्नलिखित गद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए- (10×3=30)

(क) देव! यह मेरे पितृ-पितामहों की भूमि है। इसे बेचना अपराध है; इसीलिए मूल्य स्वीकार करना मेरी सामर्थ्य के बाहर है। महाराज के बोलने से पहले ही वृद्ध मंत्री ने तीखे स्वर में कहा- अबोध! क्या बक रही है? राजकीय अनुग्रह का तिरस्कार! तेरी भूमि से चौगुना मूल्य है; फिर कौशल का तो सुनिश्चित राष्ट्रीय नियम है। तू आज से राजकीय रक्षण पाने की अधिकारिणी हुई, इस धन से अपने को सुखी बना।

P.T.O.

अथवा

राजपूत का खून तो युद्ध और शत्रु के भय से कभी इतना ठंडा नहीं होता। राजपूत तो एक बार पुलकित कलेवर हो- जय! एकलिंग की जय!! बोलकर रक्त की उष्ण गंगा में बूढ़ पड़ता है, प्रलय तांडव करने लगता है। इस पुण्य देश के रक्षक राजपूतों का गर्म रक्त जब ऐसा ठंडा पड़ जाएगा तब यह हरी-भरी सुंदरी, प्यारी वसुंधरा परायों के अत्याचार और व्यभिचार-तांडव का क्षेत्र बन जाएगी।

(ख) लेटे हुए वे घर के अंदर से आते विविध स्वरों को सुनते रहे। बहू और सास की छोटी-सी झड़प, बालटी पर खुले नल की आवाज, रसोई के बरतनों की खटपट और उसी में दो गौराइयों का वार्तालाप - और अचानक ही उन्होंने निश्चय कर लिया कि अब घर की किसी बात में दखल न देंगे। यदि गृह स्वामी के लिए पूरे घर में एक चारपाई की जगह नहीं है तो यहीं पड़े रहेंगे। अगर कहीं और डाल दी गई तो वहाँ चले जाएंगे।

अथवा

रात घनी हो आती थी। तब वे सो जाते थे। सुबह उठकर आँगन में कुछ वरजिश कर लेते थे कि शरीर ठीक रहे, बाकी दिन कोठरी में बैठे कभी कंकणों से खेलते, कभी आँगन की दीवार पर बैठने वाली गौरैया देखते, कभी दूर से कबूतर की गुटर-गूं सुनते- और कभी सामने के कोने से शेखजी के घर के लोगों की बातचीत भी सुन पड़ती।

(ग) हमें यह सुनकर अचंभा होता है लेकिन अन्य देश वालों के लिए नाक-कान का छिदना कुछ कम अचम्भें की बात ना होगी। बुरा मरज है बहुत ही बुरा। वह धन जो भोजन में खर्च होना चाहिए, बाल बच्चों का पेट काटकर गहनों की भेंट कर दिया जाता है। बच्चों को दूध न मिले न सही। घी की गंध तक उनकी नाक में न पहुंचे, न सही। मेवों और फलों के दर्शन उन्हें न हों, कोई परवा नहीं; पर देवीजी गहनें जरूर पहनेगी और स्वामीजी गहनें जरूर बनवायेंगे।

अथवा

रमा के मनोल्लास की इस समय सीमा न थी, किन्तु यह विशुद्ध उल्लास न था, इसमें एक शंका का भी समावेश था। यह उस बालक का आनंद न था जिसने माता से पैसे मांगकर मिठाई ली हो; बल्कि उस बालक का, जिसने पैसे चुराकर ली हो। उसे मिठाइयाँ मीठी तो लगती हैं; पर दिल काँपता रहता है कि कहीं घर चलने पर मार न पड़ने लगे।

2. कहानी के स्वरूप पर प्रकाश डालते हुए उसकी तात्विक समीक्षा कीजिये।

अथवा

उपन्यास के स्वरूप को समझते हुए उसकी संरचना की समीक्षा कीजिये। (18)

3. 'पुरस्कार' कहानी की मूल संवेदना लिखिए।

अथवा

'ऐसी होली खेलों लाल' कहानी की तात्विक समीक्षा कीजिये।

(14)

4. उषा प्रियंबदा की 'वापसी' कहानी की तत्वों के आधार पर समीक्षा कीजिए।

अथवा

''शरणदाता' कहानी विभाजन की त्रासदी से युक्त है'- कथन की पुष्टि कीजिए। (14)

5. 'गबन' उपन्यास का सारांश बताते हुए उसमें निहित उद्देश्य पर प्रकाश डालिए।

अथवा

'जालपा' की चारित्रिक विशेषताएँ बताइए। (14)